जैनपदसंग्रह

तृतीय भाग।



प्रकाशक

जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय।



श्रीवीतरागाय नमः

जैनपदसंग्रह

तृतीय भाग।

अर्थात्

आगरा निवासी कविवर भूधरदासजी कृत

पदविनतियोंका संग्रह।

जिसे

श्रीजैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालयके मालिकने

बम्बईके

नेटिव ओपिनियनप्रेसमें वि. वा पराजपेके

प्रबंधसे छपाया।

भाद्रपद वि० सं० १९८३।

द्वितीयावृत्ति] [मूल्य पाँच आने।

प्रकाशक
छगनमल बाकलीवाल
मालिक
जैन ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, पो० गिरगांव—बम्बई ।



मुद्रक—
विनायक वा. परांजपे,
नेटिव ओपिनियन प्रेस,
गिरगांव—बॅकरोड, मुंबई.

पदोंकी वर्णानुक्रमणिका ।





श्रीजिनाय नम ।

जैन पदसंग्रह ।

तृतीयभाग ।

अर्थात्

कविवर भूधरदासजीकृत भजनोंका संग्रह ।

---

१. राग सोरठ ।

लगी लो नाभिनंदनसों । जपत जेम चकोर चकई, चन्द भरताकों ॥ लगी लो० ॥ १ ॥ जाउ तन धन जाउ जोवन, प्रान जाउ न क्यों । एक प्रभुकी भक्ति मेरे, रहो ज्योंकी त्यों ॥ लगी लो० ॥ २ ॥ और देव अनेक सेये, कछु न पायो हों । ज्ञान खोयो गांठिको, धन करत कुवानिज ज्यों ॥ लगी लो० ॥ ३ ॥ पुत्र मित्र कलत्र ये सब सगें अपनी गों । नरककूपउद्धरन श्रीजिन, समझ भूधर यों ॥ लगी लो० ॥ ४ ॥

---

१ बुरा व्यापार । २ गरज ।

२. राग गौरी ।

अजितजिनेसुर अघहरणं । अघहरणं अशरणशरणं ॥ टेक ॥ निरखत नैन तनक नहिं त्रपते, आनँदजनक कनकवरणं ॥ अजित० ॥ १ ॥ करुना भीजे वायक[1] जिनके, गणनायक उर आभरणं । मोह महारिपु घायक[2], सायक[3], सुखदायक दुखछयकरणं ॥ अजित० ॥ २ ॥ परमातम प्रभु पतितउधारन, वारणलच्छन[4] पगधरणं । मनमथ[5]मारण विपतिविदारण, शिवकारण तारण तरणं ॥ अजित० ॥ ३ ॥ भवआतापनिकन्दन चन्दन, जगवंदन वांछाभरणं । जय जिनराज जगत वंदत जस, जन भूधर वंदत चरणं ॥ अजित० ॥ ४ ॥

३. राग काफी ।

सीमंधरस्वामी, मैं चरननका चेरा ॥ टेक ॥ इस संसार असारमें कोई, और न रच्छक[6] मेरा ॥ सीमंधर० ॥१॥ लख चौरासी जोनिमें मैं, फिरि

१ वचन । २ नाश करनेवाला । ३ वाण । ४ हाथीका चिह्न । ५ काम । ६ रक्षक ।

फिरि कीनौं फेरा। तुम महिमा जानी नहीं प्रभु, देख्या दुःख घनेरा॥ सीमंधर०॥२॥ भाग उदयतैं पाइया अब, कीजे नाथ निबेरा। बेगि दया करि दीजिये मुझे, अविचलथान वसेरा॥ सीमंधर०॥३॥ नाम लिये अघ ना रहै ज्यों, ऊगे भान अँधेरा। भूधर चिन्ता क्या रही ऐसा, समरथ साहिव तेरा॥ सीमंधर०॥४॥

४. राग सोरठ।

वा पुरके वारणैं जाऊं॥ टेक॥ जम्बूद्वीप विदेहमें, पूरव दिश सोहै हो। पुंडरीकिनी नाम है, नर सुर मन मोहै हो॥ वा पुर०॥१॥ सीमंधर शिवके धनी, जहँ आप विराजै हो। बारह गण विच पीठपै, शोभानिधि छाजै हो॥ वा पुर०॥२॥ तीन छत्र माथैं दिपैं, वर चामर वीजै हो। कोटिक रतिपति रूपपै, न्यौछावर कीजै हो॥ वा पुर०॥३॥ निरखत विरख अशो-

---

१ अपार। २ मोक्ष। ३ पाप। ४ दरवाजे। ५ मस्तकपर। ६ ढुरता है। ७ कामदेव। ८ वृक्ष।

कको, शोकावलि भाजै हो। वानी वरसै अमृत सी, जलधर ज्यों गाजै हो॥ वा पुर०॥ ४॥ वरसैं सुमनसुहावनें, सुरदुंदभि गाजै हो। प्रभु तन तेजसमूहसौं, ससि सूरज लाजै हो॥ वा पुर०॥ ५॥ समोसरन विधि वरनतैं, बुधि वरन न पावै हो। सब लोकोत्तर लच्छमी, देखें वनि आवै हो॥ वा पुर०॥ ६॥ सुरनर मिलि आवैं सदा, सेवा अनुरागी हो। प्रकट निहारैं नाथकों, धनि वे बड़भागी हो। वा पुर०॥ ७॥ भूधर विधिसौं भावसौं, दीनी त्रय फेरी हो। जैवन्ती वरतो सदा, नगरी जिनकेरी हो॥ वा पुर०॥ ८॥

५. राग सोरठ।

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय॥ टेक॥ फल चाखनकी बार भरै दृग, मर है मूरख रोय॥ अज्ञानी०॥ १॥ किंचित् विषयनिके सुख कारण, दुर्लभ देह न खोय। ऐसा अवसर फिर मिलैगा, इस नींदड़ी न सोय॥ अज्ञानी०॥

१ समुद्र। २ पुष्प। ३ चन्द्र।

॥ २ ॥ इस विरियांमें[1] धर्म-कल्प-तरु, सींचत स्यानें[2] लोय[3]। तू विष वोवन लागत तो सम, और अभागा कोय ॥ अज्ञानी० ॥ ३ ॥ जे जगमें दुखदायक वेरस, इसहीके फल सोय। यों मन भूधर जानिकै भाई, फिर क्यों भोंदू होय ॥ अज्ञानी० ॥ ४ ॥

६. राग सोरठ।

मेरे मन सूवा, जिनपद पींजरे वसि, यार लाव न वार रे ॥ टेक ॥ संसारसेंवलवृच्छ सेवत, गयो काल अपार रे। विषय फल तिस तोड़ि चाखे, कहा देख्यौ सार रे ॥ मेरे मन० ॥ १ ॥ तू क्यों निचिन्तो[4] सदा तोकौं, तकत काल मँजार[5] रे। दावै अचानक आन तब तुझे, कौन लेय उवार रे ॥ मेरे मन० ॥ २ ॥ तू फँस्यो कर्म कुफन्द भाई, छुटै कौन प्रकार रे। तैं मोह-पंछी-वधक-विद्या, लखी नाहिं गँवार रे ॥ मेरे मन० ॥ ॥ ३ ॥ है अजौं एक उपाय भूधर, छुटै जो

---

१ वेला-समय। २ विवेकी। ३ लोग। ४ निश्चिन्त। ५ बिल्ली।

नर धार रे। रटि नाम राजुलरमनको, पशुबंध छोड़नहार रे॥ मेरे मन०॥ ४॥.

७. राग सोरठ।

भलो चेत्यो वीर नर तू, भलो चेत्यो वीर॥ टेक॥ समुझि प्रभुके शरण आयो, मिल्यो ज्ञान वजीर॥ भलो०॥ १॥ जगतमें यह जनम हीरा, फिर कहां थो धीर। भली वार विचार छाँड़्यो, कुमति कामिनि सीर[1]॥ भलो०॥ २॥ धन्य धन्य दयाल श्रीगुरु, सुमरि गुणगंभीर। नरक परतैं राखि लीनों, बहुत कीनी भीर[2]॥ भलो०॥ ३॥ भक्ति नौका लही भागनि, कितैक[3] भवदधिनीर। ढील अब क्यों करत भूधर, पहुँच पैली तीर॥ भलो०॥ ४॥

८. राग सोरठ।

सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी॥ टेक॥ नरभव पाय विषय मति सेवो, ये दुरगति अगवानी॥ सुन०॥ १॥ यह भव कुल यह तेरी महिमा, फिर समझी जिनवानी॥

१ साँझा। २ सहाय। ३ कितना।

इस अवसरमें यह चपलाई, कौन समझ उर आनी ॥ सुन० ॥ २ ॥ चंदन काठ-कनकके भाजन, भरि गंगाका पानी । तिल खलि राँधत मंदमती जो, तुझ क्या रीस विरानी ॥ सुन० ॥ ३ ॥ भूधर जो कथनी सो करनी, यह बुधि है सुखदानी । ज्यों मशालची आप न देखै, सो मति करै कहानी ॥ सुनि० ॥

९. राग सोरठ ।

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया ॥ टेक ॥ टुक विश्वास किया जिन तेरा, सो मूरख पिछताया ॥ सुनि० ॥ १ ॥ आपा तनक दिखाय बीज[1] ज्यों, मूढमती ललचाया । करि मद अंध धर्म हर लीनौं, अंत नरक पहुँचाया ॥ सुनि० ॥ २ ॥ केते कंथ किये तैं कुलटा, तो भी मन न अघाया । किसहीसौं नहिं प्रीति निवाही, वह तजि और लुभाया ॥ सुनि० ॥ ३ ॥ भूधर छलत फिरै यह सबकों, भौंदू करि जग पाया । जो इस ठगनीकों ठग बैठे, मैं तिसको सिर नाया ॥ सुनि० ॥ ४ ॥

१ बिजलीके समान ।

१०.

वे कोई अजब तमासा, देख्या बीच जहान वे, जोर तमासा सुपनेकासा ॥ टेक ॥ एकोंके घर मंगल गावैं, पूगी[1] मनकी आसा। एक वियोग भरे बहु रोवैं, भरि भरि नैन निरासा ॥ वे कोई० ॥ १ ॥ तेज तुरंगनिपै चढ़ि चलते, पहिरैं मलमल खासा। रंक भये नागे अति डोलैं, ना कोइ देय दिलासा[2] ॥ वे कोई० ॥ २ ॥ तैरकैं[3] राज तखतपर[4] बैठा, था खुशवक्त खुलासा। ठीक दुपहरी मुद्दत आई, जंगल कीना वासा ॥ वे कोई० ॥३॥ तन धन अथिर निहायत[5] जगमें, पानीमाहिं पतासा। भूधर इनका गरब करैं जे, फिट[6] तिनका जनमासा[7] ॥ वे कोई० ॥ ४ ॥

११. राग ख्याल।

जगमें जीवन थोरा, रे अज्ञानी जागि ॥टेक॥ जनम ताड़ तरुतैं पड़ै, फल संसारी जीव। मौत महीमें आय हैं, और न ठौर सदीव ॥ जगमें०

१ पूरी हुई। २ धीरज। ३ सबेरे। ४ सिंहासन। ५ सर्वथा। ६ धिक्। ७ मनुष्यजन्म।

॥ १ ॥ गिर-सिर दिवला जोइया, चहुँदिशि बाजै पौन । वलंत अचंभा मानिया, बुझत अचंभा कौन ॥ जगमें० ॥ २ ॥ जो छिन जाय सो आयुमैं, निशि दिन ढूकै काल । बांधि सकै तो है भला, पानी पहिली पाल ॥ जगमें०॥३॥ मनुषदेह दुर्लभ्य है, मति चूकै यह दाव। भूधर राजुलकंतकी, शरण सिताबी आव ॥ जगमें० ॥ ४ ॥

१२. राग ख्याल।

गरव नहिं कीजै रे, ऐ नर निपट गँवार ॥ टेक ॥ झूठी काया झूठी माया, छाया ज्यों लखि लीजै रे ॥ गरव० ॥ १ ॥ कै छिन सांझ सुहागरु जोबन, कै दिन जगमें जीजै रे ॥ गरव० ॥ २ ॥ वेगा चेत विलम्ब तजो नर, बंध बढ़ै तिथिँ छीजै रे ॥ गरव० ॥ ३ ॥ भूधर पलपल हो है भारी, ज्यों ज्यों कमरी भीजै रे ॥ गरव० ॥ ४ ॥

१३. राग ख्याल।

थांकी कथनी म्हांनैं प्यारी लगै जी, प्यारी

---

१ दीपक। २ चले। ३ निकट आवे। ४ श्रीनेमिनाथकी। ५ जीवेंगे। ६ जल्दी। ७ आयु।

लगै म्हांरी भूल भगै जी ॥ टेक ॥ तुमहित हांक विना हो श्रीगुरु, सूतो जियरो काई[1] जगै जी ॥ थांकी० ॥ १ ॥ मोहनिधूलि मेलि म्हारे[2] माथै[3], तीन रतन म्हांरा[4] मोह ठगै जी । तुम पद ढोकंत[5] सीस झरी रज, अब ठगको कर नाहिं वगै जी ॥ थांकी० ॥ २ ॥ टूट्यो चिर मिथ्यात महाज्वर, भागां[6] मिल गया वैद मगै[7] जी । अंतर अरुचि मिटी मम आतम, अब अपने निजदर्व पगै जी ॥ थांकी० ॥ ३ ॥ भव वन भ्रमत बढ़ी तिसना तिस, क्योंहि बुझै नांहिं हियरा[8] दगै[9] जी । भूधर गुरुउपदेशामृतरस, शान्तमई आनँद उमगै जी ॥ थांकी० ॥ ४ ॥

१४. राग ख्याल ।

मा विलंब न लाव[10] पठाव[11] तहाँ[12] री, जहँ जगपति पिय प्यारो ॥ टेक ॥ और न मोहि सुहाय कछू अब, दीसै जगत अँधारो री ॥ मा विलंब०

---

१ कैसे । २ मेरे । ३ सिरपर । ४ मेरा । ५ प्रणाम करनेसे । ६ भाग्यसे । ७ मार्गमें । ८ हृदय । ९ जलता है । १० कर । ११ भेज दे । १२ उसी जगह ।

॥ १ ॥ मैं श्रीनेमिदिवाकरको कब, देखों वदन उजारो। बिन देखें मुरझाय रह्यो है, उर अरविंद हमारो री! ॥ मा विलंब० ॥ २ ॥ तन छाया ज्यौं संग रहोंगी; वे छांड़हिं तो छांरो। बिन अपराध दंड मोहि दीनो, कहा चलै मेरो चारो ॥ मा विलंब० ॥ ३ ॥ इहि विधि रागउदय राजुलनें, सह्यो विरह दुख भारो। पीछें ज्ञानभाँन बल विनस्यो, मोह महातम कारो री ॥ मा विलंब० ॥ ४ ॥ पियके पैंड़े पैंड़ौ कीनों, देखि अथिर जग सारो। भूधरके प्रभु नेमि पियासौं, पाल्यौ नेह करारो री ॥ मा विलंब० ॥ ५ ॥

१५. राग ख्याल।

देख्यो री! कहीं नेमिकुमार ॥ टेक ॥ नैननि प्यारो नाथ हमारो, प्रानजीवन प्रानन आधार ॥ देख्यो० ॥ १ ॥ पीव वियोग विथा बहु पीरी, पीरी भई हलदी उनहार। होउं हरी तवही जब भेटों, श्यामवरन सुंदर भरतार ॥ देख्यो० ॥ २ ॥

---

१ सूरज। २ कमंल। ३ सूर्य। ४ पीछा की। ५ पीली। ६ समान।

विरह नदी असराल[1] बहै उर, बूड़त हौं वामैं निरधार[2] । भूधर प्रभु पिय खेवटिया विन, समरथ कौन उतारनहार ॥ देख्यो० ॥ ३ ॥

१६. राग पंचम ।

जिनराज ना विसारो, मति जन्म वादि[3] हारो ॥ टेक ॥ नर भौ आसान[4] नाहीं, देखो सोच समझ वारो ॥ जिनराज० ॥ १ ॥ सुत मात तात तरुनी[5], इनसौं ममत निवारो । सबही सगे गरजके दुखसीर नहिं निहारो ॥ जिनराज० ॥ २ ॥ जे खायँ लाभ सब मिलि, दुर्गतमैं तुम सिधारो । नटका कुटंव जैसा, यह खेल यों विचारो ॥ जिनराज० ॥ ३ ॥ नाहक[6] पराये काजैं, आपा नरकमैं पारो । भूधर न भूल जगमैं, जाहिर दगा है यारो ॥ जिनराज० ॥ ४ ॥

१७. राग नट ।

जिनराज चरन मन मति बिसरै ॥ टेक ॥ को जानैं किहिं बार[7] कालकी, धार[8] अचानक आनि

१ अथाह । २ निराधार । ३ वृथा खोओ । ४ सहज । ५ स्त्री । ६ वृथा । ७ समय । ८ धाड़ ।

परे ॥ जिनराज० ॥ १ ॥ देखत दुख भजि जाहिं दशौं दिश, पूजत पातकपुंज गिरै। इस संसार क्षारसागरसौं, और न कोई पार करै ॥ जिन-राज० ॥ २ ॥ इक चित ध्यावत वांछित पावत, आवत मंगल विघन टरै। मोहनि धूलि परी मांथें चिर, सिर नावत ततकाल झरै ॥ जिन-राज० ॥३॥ तवलौं भजन सँवार सयानै, जवलौं कफ नहिं कंठ अरै। अगनि प्रवेश भयो घर भूधर, खोदत कूप न काज सरै ॥ जिनराज० ॥४॥

१८. राग सारंग।

भवि देखि छवी भगवानकी ॥ टेक ॥ सुंदर सहज सोम आनँदमय, दाता परम कल्यानकी ॥ भवि० ॥१॥ नासादृष्टि मुदित[1] मुखवारिज[2], सीमा सव उपमानकी। अंग अडोल अचल आसन दिढ़, वही दशा निज ध्यानकी ॥ २ ॥ इस जोगासन जोगरीतिसौं. सिद्ध भई शिवथानकी। ऐसें प्रगट दिखावै मारग, मुद्रा धात पखानकी ॥

---

१ प्रसन्न। २ कमल।

भवि० ॥३॥ जिस देखें देखन अभिलाषा, रहत न रंचक आनकी । तृपत होत भूधर जो अब ये, अंजुलि अम्रतपानकी ॥ भवि० ॥ ४ ॥

१९. राग मलार ।

अब मेरैं समकित सावन आयो ॥ टेक ॥ बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज सुहायो॥ अब मेरैं०॥१॥ अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरति घटा घन छायो । बोलै विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिन भायो ॥ अब मेरैं० ॥ २ ॥ गुरुधुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो । साधक भाव अँकूर उठे बहु, जित तित हरष सवायो ॥ अब मेरैं० ॥ ३ ॥ भूल धूल कहिं मूल न सूझत, समरस जल झर लायो । भूधर को निकसै अब बाहिर, निज निरँचू घर पायो ॥ अब मेरैं० ॥ ४ ॥

२०. राग सोरठ ।

भगवन्तभजन क्यों भूला रे ॥ टेक ॥ यह

---

१ अन्यकी । २ वर्षाऋतु । ३ बिजुली । ४ मेघ । ५ जिसमें पानी नहीं चूता है ।

संसार रैनका सुपना, तन धन वारि[1]-बबूला[2] रे ॥ भगवन्त० ॥ १ ॥ इस जोवनका कौन भरोसा, पावकमें तृण[3]पूला रे ! । काल कुदार लियें सिर ठाड़ा, क्या समझै मन फूला रे ! ॥ भगवन्त० ॥ २ ॥ स्वारथ साधै पाँच पाँव तू, परमारथकों लूला[4] रे ! । कहु कैसें सुख पैहै प्राणी, काम करै दुखमूला रे ॥ भगवन्त० ॥ ३ ॥ मोह पिशाच छल्यो मति मारै, निज कर कंध वसूला रे । भज श्रीराजमतीवर[5] भूधर, दो दुरमति सिर धूला रे ॥ भगवन्त० ॥ ४ ॥

२१. राग विहागरो ।

नेमि विना न रहै मेरो जियरा ॥ टेक ॥ हेरै[6] री हेली[7] तपत उर कैसो, लावत क्यों निज हाथ न नियरा[8] ॥ नेमि विना० ॥ १ ॥ करि करि दूर कपूर कमल दल, लगत करूर[9] कलाधर[10] सियरा[11] ॥

---

१ जलका । २ बुदबुदा । ३ घासका पूला । ४ लँगडा । ५ नेमिनाथ । ६ देख री । ७ सहेली—सखी । ८ निकट । ९ क्रूर । १० चंद्र । ११ शीतल ।

नेमि विना० ॥ २ ॥ भूधर के प्रभु नेमि पिया विन, शीतल होय न राजुल हियरा ॥ नेमि विना० ॥ ३ ॥

२२. राग ख्याल ।

मन मूरख पंथी, उस मारग मति जाय रे ॥ टेक ॥ कामिनि तन कांतार[1] जहां है, कुच परवत दुखदाय रे ॥ मन मूरख० ॥ १ ॥ काम किरात[2] बसै तिह थानक[3], सरवस लेत छिनाय रे । खाय खता[4] कीचकसे बैठे, अरु रावनसे राय रे ॥ मन मूरख० ॥ २ ॥ और अनेक लुटे इस पैंड़े[5], वरनैं कौन बढ़ाय रे । वरजत हों वरज्यौ रह भाई, जानि दगा मति खाय रे ॥ मन मूरख० ॥ ३ ॥ सुगुरु दयाल दया करि भूधर, सीख कहत समझाय रे । आगैं जो भावै करि सोई, दीनी बात जताय रे ॥ मन मूरख० ॥ ४ ॥

२३. राग विलावल ।

सब विधि करन उतावला[6], सुमरनकौं सीरा[7] ॥ टेक ॥ सुख चाहै संसारमैं, यों होय न नीरा ॥

---

१ वन । २ भील । ३ स्थानमें । ४ धोखा । ५ रास्ते । ६ जल्दबाज ७ ठढा–सुस्त ।

सव विधि० ॥ १ ॥ जैसे कर्म कमाय है, सो ही फल वीरा ! । आम न लागै आकके, नग होय न हीरा ॥ सव विधि० ॥ २ ॥ जैसा विषयनिकों चहै, न रहै छिन धीरा । त्यों भूधर प्रभुकों जपै, पहुँचे भवतीरा ॥ सब विधि० ॥ ३ ॥

२४. राग विलावल ।

रटि रसना मेरी ऋषभ जिनन्द, सुर नर जच्छ चकोरन चन्द ॥ टेक ॥ नामी नाभि नृपतिके वाल, मरुदेवीके कँवर कृपाल ॥ रटि० ॥ १ ॥ पूज्य प्रजापति पुरुष पुरान, केवल किरन धरैं जगभान ॥ रटि० ॥ २ ॥ नरकनिवारन विरद विख्यात, तारन तरन जगतके तात ॥ रटि० ॥ ३ ॥ भूधर भजन किये निरबाह, श्रीपद-पदम भँवर हो जाह ॥ रटि० ॥ ४ ॥

२५. राग गौरी ।

मेरी जीभ आठौं जाम, जपि जपि ऋषभजिनिंदजीका नाम ॥ टेक ॥ नगर अजुध्या उत्तम ठाम, जनमैं नाभि नृपतिकें धाम ॥ मेरी० ॥ १ ॥ सहस अठोत्तर अति अभिराम, लसत सुलच्छन

लाजत काम ॥ मेरी० ॥ २ ॥ करि श्रुति गान थके हरि राम, गनि न सके गणधर गुनग्राम ॥ मेरी० ॥ ३ ॥ भूधर सार भजन परिनाम, अर सब खेल खेलके खांम (?) ॥ मेरी० ॥ ४ ॥

२६. राग धमाल।

देखे देखे जगतके देव, राग रिसंसौं[1] भरे ॥ टेक ॥ काहूके सँग कामिनि कोऊ आयुधवान खरे ॥ देखे० ॥ १ ॥ अपने औगुन आपही हो, प्रकट करैं उघरे । तऊ अबूझ न बूझहिं देखो, जन मृग भोरेंप[2] रे ॥ देखे० ॥ २ ॥ आप भिखारी है किनही हो, काके दलिद हरे । चढ़ि पाथरकी नावपै कोई, सुनिये नाहिं तरे ॥ देखे० ॥ ३ ॥ गुन अनन्त जा देवमें औ, ठारह दोष टरे । भूधर ता प्रति भावसौं दोऊ, कर निज सीस धरे ॥ देखे० ॥ ४ ॥

२७

देखो गरबगहेली री हेली ! जादौंपतिकी नारी ॥ टेक ॥ कहां नेमि नायक निज मुखसौं,

---

१ द्वेषसे । २ भोळापन ।

टेहल[1] कहै वड़भागी। तहां गुमान कियो मतिहीनी, सुनि उर दौंसी[2] लागी॥ देखो०॥ १॥ जाकी चरण धूलिको तरसैं, इन्द्रादिक अनुरागी। ता प्रभुको तन-वसन[3] न पीड़ै,[4] हा! हा! परम अभागी॥ देखो०॥ २॥ कोटि जनम अघभंजन जाके, नामतनी वलि जइये। श्रीहरिवंशतिलक तिस सेवा, भाग्य विना क्यों पइये॥ देखो०॥ ३॥ धनि वह देश धन्य वह धरनी, जगमें तीरथ सोई। भूधरके प्रभु नेमि[5] नवल निज, चरन धरैं जहाँ दोई॥ देखो०॥ ४॥

२८. राग धमाल सारंग।

अरज करै राजुल नारी, वनवासी पिया तुम क्यों छाँरी?॥ टेक॥ प्रभु तो परम दयाल सबनिपै, सबहीके हितकारी। मोपै कठिन भये क्यों साजन!, कहिये चूक हमारी॥ अरज०॥ १॥ अब ही भोग-जोग हो वालम, यह बुधि कौनं विचारी। आगैं ऋषभदेवजी व्याही, कच्छ-

१ चाकरी, वस्त्र निचोडनेके लिए। २ दावाग्निसी। ३ धोती। ४ निचोडै। ५ श्रीनेमिनाथ।

सुकच्छकुमारी । सोई पंथ गहो पिय पाछैं, हूजौं संजमधारी ॥ अरज० ॥ २ ॥ तुम विन एक पलक जो प्रीतम, जाय पहर सौ भारी । कैसें निशदिन भरौं नेमिजी !, तुम तो ममता डारी। याको ज्वाब देहु निरमोही !; तुम जीते मैं हारी ॥ अरज० ॥ ३ ॥ देखो रैनवियोगिनि चकई, सो विलखै निशि सारी । आश बाँधि अपनो जिय राखै, प्रात मिलैं पिय प्यारी । मैं निराश निरधारिनि कैसें, जीवों अती दुखारी ॥ अरज० ॥ ४ ॥ इह विधि विरह नदीमें व्याकुल, उग्रसेनकी बारी । धनि धनि समुद्रविजयके नंदन, बूड़त पार उतारी । करहु दयाल दया ऐसी ही, भूधर शरन तुम्हारी ॥ अरज० ॥५॥

२९. राग धमाल सारंग ।

हूं तो कहा करूं कित जाउं, सखी अब कासौं पीर कहूं री ! ॥ टेक ॥ सुमति सती सखियनिके आगैं, पियके दुख परकासै । चिदानन्दवल्लभकी वनिता, विरह वचन मुख भासै ॥ हूं तो० ॥ १ ॥ कंत विना कितने दिन बीते, कौंलौं

धीर धरौं री। पर घर हाँडै निज घर छांडै, कैसी विपति भरौं री ॥ हूं तो० ॥ २ ॥ कहत कहावतमें सब यों ही, वे नायक हम नारी। पै सुपनैं न कभी मुँह बोले, हमसी कौन दुखारी॥ हूं तो० ॥ ३ ॥ जइयो नाश कुमति कुलटाको, बिरमायो[1] पति प्यारो। हमसौं विरचि रच्यो रँग वाके, असमझ (?) नाहिं हमारो ॥ हूं तो० ॥ ४ ॥ सुंदर सुघर कुलीन नारि मैं, क्यौं प्रभु मोहि न लोरैं[2]। सत हू देखि दया न धरैं चित, चेरीसों हित जोरैं ॥ हूं तो० ॥ ५ ॥ अपने गुनकी आप बड़ाई, कहत न शोभा लहिये। ऐरी! वीर चतुर चेतनकी, चतुराई लखि कहिये ॥ हूं तो० ॥ ६ ॥ करिहों आजि अरज जिनजीसों, प्रीतमको समझावें। भरता भीख दई गुन मानौं, जो बालम घर आवैं ॥ हूं तो० ॥ ७ ॥ सुमति वधू यों दीन दुहागनि, दिन दिन झुरत निरासा। भूधर पीउ प्रसन्न भये विन, वसै न तिय घरवासा ॥ हूं तो० ॥ ८ ॥

---

१ भटके। २ प्रेम करें।

३०. राग सोरठ।

चित ! चेतनकी यह विरियाँ रे ॥ टेक ॥
उत्तम जनम सुतन तरुनापौ[1], सुकृत[2] बेल फल फरियाँ रे ॥ चित० ॥१॥ लहि सत संगतिसौं सब समझी, करनी खोटी खरियाँ रे। सुहित सँभालि शिथिलता तजिकै, जाहैं वेली झरियाँ रे ॥ चित० ॥ २ ॥ दल बल चहल महल रूपेका, अर कंचनकी कलियाँ रे। ऐसी विभव बढ़ी कै बढ़ि है, तेरी गरज क्या सरियाँ रे ॥ चित० ॥ ३ ॥ खोय न वीर विषय खल सौंटैं[3], ये कोरनकी[4] घरियाँ रे। तोरि न तनक तँगा[5]हित भूधर, मुकताफलकी लरियाँ[6] रे ॥ चित० ॥ ४ ॥

३१. राग पंचम।

आज गिरिराजके शिखर सुंदर सखी, होत है अतुल कौतुक महा मनहरन ॥ टेक ॥ नाभिके नंदकौं जगतके चन्दकौं, ले गये इन्द्र मिलि जन्म-मंगल करन ॥आज०॥१॥ हाथ हाथन धरे सुरन

---

१ जवानी। २ पुण्य। ३ बदलेमें। ४ करोड़ोंकी। ५ धागा, डोराके लिए। ६ लड़ीं।

कंचन घेरे. छीरसागर भरे नीर निरमल वरन। सहस अर आठ गिन एक ही वार जिन, सीस सुरईशके करन लागे ढरन ॥ आज० ॥ २ ॥ नचत सुरसुन्दरीं रहस रससों भरीं, गीत गावैं अरी दैहिं ताली करन। देव दुंदभि वजे वीन वंसी सजे, एकसी परत आनंद घनकी भरन ॥ आज० ॥ ३ ॥ इन्द्र हर्पित हिये नेत्र अंजुल किये, तृपति होत न पिये रूपअम्रतझरन। दास भूधर भनें सुदिन देखें वनैं, कहि थकें लोक लख जीभ न सकै वरन ॥ आज० ॥ ४ ॥

३२

ऐसी समझके सिर धूल ॥ ऐसी० ॥ टेक ॥ धरम उपजन हेत हिंसा, आचरें अघमूल ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ छके मत-मद-पान पीके, रहे मनमें फूल। आम चाखन चहैं भोंदू, वोय पेड़ वँवूल ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ देव रागी लालची गुरु, सेय सुखहित भूल। धर्म नॅंगकी परख नाहीं, भ्रम हिंडोले झूल ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ लाभकारन

१ घड़े—कलश। २ रत्नकी।

रतन विणजे, परखको नहिं सूल । करत इहि विधि वणिज भूधर, विनस जै है मूल ॥ ऐसी० ॥ ४ ॥

३३

अव पूरीकर नींदड़ी, सुन जीया रे! चिरकाल तू सोया ॥ सुन० ॥ टेक ॥ माया मैली रातमें, केता काल विगोया ॥ अव० ॥१॥ धर्म न भूल अयान रे! विषयोंवश वाला । सार सुधारस छोड़के, पीवै जहर पियाला ॥ अव० ॥२॥ मानुष भवकी पैठमैं, जग विणजी आया । चतुर कमाई कर चले, मूढ़ों मूल गुमाया ॥ अव० ॥ ३ ॥ तिसना तज तप जिन किया, तिन बहु हित जोया । भोगमगन शठ जे रहे, तिन सरवस खोया ॥ अव० ॥४॥ काम विथा-पीड़ित जिया, भोगहि भले जानैं । खाज खुजावत अंगमें, रोगी सुख मानैं ॥ अव० ॥ ५ ॥ राग उरगनी जोरतैं, जग डसिया भाई ! जिय गाफिल हो रहे, मोह लहर चढ़ाई ॥

१ शहर । २ खोया । ३ सर्पनी ।

अव० ॥ ६ ॥ गुरु उपगारी गारुड़ी[1], दुख देख निवारैं । हित उपदेश सुमंत्रसों, पढ़ि जहर उतारैं ॥ अव० ॥ ७ ॥ गुरु माता गुरु ही पिता, गुरु सज्जन भाई । भूधर या संसारमें, गुरु शरनसहाई ॥ अव० ॥ ८ ॥

२४. राग बंगाला ।

जगमें श्रद्धानी जीव जीवनमुकत हैंगे[2] ॥ टेक ॥ देव गुरु सांचे मानैं, सांचो धर्म हिये आनैं, ग्रंथ ते ही सांचे जानैं, जे जिनउकत[3] हैंगे ॥ जगमें० ॥ १ ॥ जीवनकी दया पालैं, झूठ तजि चोरी टालैं, परनारी भालैं नैन जिनके लुकत हैंगे ॥ जगमें० ॥ २ ॥ जीयमें सन्तोष धारैं हियैं समता विचारैं, आगैं को न बंध पारैं, पाछेंसौं चुकत हैंगे ॥ जगमें० ॥ ३ ॥ बाहिज क्रिया अराधैं, अन्तर सरूप साधैं, भूधर ते मुक्त लाधैं, कहूं न रुकत हैंगे ॥ जगमें० ॥ ४ ॥

---

१ जहर उतारनेवाले । २ इस पदकी चारों टेकें निकाल डालनेसे एक घनाक्षरी (३२ वर्ण) कवित्त बन जाता है । ३ उक्त, प्रणति, कहे हुए । ४ देखनेमें । ५ छिपते है, लज्जित होते है ।

३५. राग बंगाला ।

आया[1] रे बुढापा मानी सुधि बुधि विसरानी ॥ टेक ॥ श्रवनकी शक्ति घटी, चाल चालै अटपटी, देह लटी[2] भूख घटी, लोचन झरत पानी ॥ आया रे० ॥१॥ दाँतनकी पंक्ति टूटी, हाड़नकी संधि छूटी, कायाकी नगरि लूटी, जात नहिं पहिचानी ॥ आया रे० ॥ २ ॥ बालोंने वरन[3] फेरा, रोगने शरीर घेरा, पुत्रहू न आवै नेरा[4], औरोंकी कहा कहानी ॥ आया रे० ॥२॥ भूधर समुझि अब, स्वहित करैगो कब, यह गति ह्वै है जब, तब पिछतैहै प्रानी ॥ आया रे० ॥ ४ ॥

३६. राग सोरठ ।

अन्तर उज्जल करना रे भाई ! ॥ टेक ॥ कपट कृपान तजै नहिं तबलौं, करनी काज न सरना रे ॥ अन्तर० ॥ १ ॥ जप तप तीरथ जज्ञ व्रतादिक, आगमअर्थउचरना रे । विषय कषाय कीच नहिं धोयो, यों ही पचि पचि मरना रे ॥

---

१ इसकी भी टेकें निकाल देनेसे घनाक्षरी बन जाता है । २ कमजोर हुई । ३ रंग । ४ निकट ।

अन्तर० ॥ २ ॥ बाहिर भेष क्रिया उर शुचिसों कीयें पार उतरना रे । नाहीं है सब लोक रं-जना, ऐसे वेदन वरना रे ॥ अन्तर० ॥ ३ ॥ कामादिक मनसौं मन मैला, भजन किये क्या तिरना रे । भूधर नीलवसनपर[1] कैसें, केसररंग उछरना रे ॥ अन्तर० ॥ ४ ॥

३७. राग सोरठ।

वीरा! थारी बान बुरी परी रे, वरज्यो मानत नाहिं ॥ टेक ॥ विषय विनोद महा बुरे रे, दुख दाता सरवंग । तू हटसौं ऐसें रमै रे, दीवे[2] पड़त पतंग ॥ वीरा० ॥ १ ॥ ये सुख हैं दिन दोयके रे, फिर दुखकी सन्तान । करै[3] कुहाड़ी लेइकै रे, मति मारै पँग[4] जानि ॥ वीरा० ॥२॥ तनक न संकट सहि सकै रे! छिनमैं होय अधीर । नरक विपति बहु दोहली रे, कैसे भरि है वीर ॥ वीरा० ॥ ३ ॥ भव सुपना हो जायगा रे, करनी रहेगी निदान । भूधर फिर पछतायगा रे, अब ही समुझि अजान ॥ वीरा० ॥४॥

---

१ काले कपड़ेपर। २ दीपकमें। ३ अपने हाथसे। ४ अपने पैरपर।

३८. राग काफी ।

मनहंस! हमारी लै शिक्षा हितकारी ॥टेक॥ श्रीभगवानचरन पिंजरे वसि, तजि विषयनिकी यारी ॥ मन० ॥ १ ॥ कुमति कागलीसौं मति राचो, ना वह जात तिहारी । कीजे प्रीत सुमति हंसीसौं, बुध हंसनकी प्यारी ॥ मन० ॥ २ ॥ काहेको सेवत भव झीलर[1], दुखजलपूरित खारी । निज बल पंख पसारि उड़ो किन, हो शिव सरवरचारी[2] ॥ मन० ॥ ३ ॥ गुरुके वचन विमल मोती चुन, क्यों निज वान विसारी । ह्वै है सुखी सीख सुधि राखें, भूधर भूलैं ख्वारी ॥ मन० ॥ ४ ॥

३९. राग ख्याल कान्हडी ।

एजी मोहि तारिये शान्तिजिनंद ॥ टेक ॥ तारिये तारिये अधम उधारिये, तुम करुनाके कंद ॥ एजी० ॥ १ ॥ हथनापुर जनमैं जग जानैं, विश्वसेननृपनन्द ॥ एजी० ॥ २ ॥ धनि माता ऐरादेवी, जिन जाये जगचंद ॥

१ झील । २ सरोवर–तालावका रहनेवाला ।

एजी०॥ ३ ॥ भूधर विनवै दूर करो प्रभु, सेव-
कके भवद्वंद ॥ एजी० ॥ ४ ॥

४०. राग ख्याल।

और सब थोथी बातें, भज ले श्रीभगवान ॥
टेक ॥ प्रभु विन पालक कोई न तेरा, स्वारथ-
मीत जहान ॥ और० ॥ १ ॥ परवनिता
जननी सम गिननी, परधन जान पखान। इन
अमलों परमेसुर राजी, भाषें वेद पुरान ॥
और० ॥ २ ॥ जिस उर अन्तर बसत निरन्तर,
नारी औगुनखान। तहां कहां साहिबका वासा,
दो खांड़े[1] इक म्यान ॥ और० ॥ ३ ॥ यह मत
सतगुरुका उर धरना, करना कहिं न गुमान ॥
भूधर भजन न पलक विसरना, मरना मित्र
निदान ॥ और० ॥ ४ ॥

४१. राग प्रभाती।

अजित जिन विनंती हमारी मान जी, तुम
लागे मेरे प्रान जी ॥ टेक ॥ तुम त्रिभुवनमें
कलप तरोवर, आस भरो भगवान जी ॥

---

१ दो तलवार।

अजित० ॥ १ ॥ वादि अनादि गयो भव-भ्रमतैं, भयो बहुत कुलकान जी । भाग सँजोग मिले अब दीजे, मनवांछित वरदान जी ॥ अजित० ॥ २ ॥ ना हम मांगैं हाथी घोड़ा, ना कछु संपति आन जी । भूधरके उर बसो जगतगुरु, जबलौं पद निरवानजी ॥ अजित० ॥ ३ ॥

४२. राग धनासरी ।

सो मत सांचो है मन मेरे ॥ टेक ॥ जो अनादि सर्वज्ञप्ररूपित, रागादिक विन जे रे ॥ सो मत० ॥ १ ॥ पुरुष प्रमान प्रमान वचन तिस, कलपित जान अने[2] रे । राग-दोष-दूषित तिन वायक[3], सांचे हैं हित तेरे ॥ सो मत० ॥ २ ॥ देव अदोष धर्म हिंसा विन, लोभ विना गुरु वे रे । आदि अन्त अविरोधी आगम, चार रतन जहँ ये रे ॥ सो मत० ॥ ३ ॥ जगत भर्खो पाखण्ड परख विन, खाइ खता बहुते रे । भूधर करि निज सुबुधि कसौटी, धर्म कनक कसि ले रे ॥ सो मत० ॥ ४ ॥

---

१ वृथा । २ अन्यमत । ३ वचन ।

४३

मेरे चारौं शरन सहाई ॥ टेक ॥ जैसें जलधि परत वायसकौं[1] वोहित[2] एक उपाई ॥ मेरे० ॥१॥ प्रथम शरन, अरहन्त चरनकी, सुरनर पूजत पाई । दुतिय शरन श्रीसिद्धनकेरी, लोक-तिलक-पुर-राई ॥ मेरे० ॥ २ ॥ तीजे सरन सर्व साधुनिकी, नगन दिगम्बर-कोई । चौथैं धर्म अहिंसारूपी, सुरगमुकतिसुखदाई ॥ मेरे० ॥३॥ दुरगति परत सुजन परिजनपै, जीव न राख्यो जाई । भूधर सत्य भरोसो इनको, ये ही लेहिं बचाई ॥ मेरे० ॥ ४ ॥

४४. राग सारंग।

जपि माला जिनवर नामकी ॥ टेक ॥ भजन सुधारससों नहिं धोई, सो रसना किस कामकी ॥ जपि० ॥ १ ॥ सुमरन सार और मिथ्या, पटत्तर धूँवा नामकी । विषम कमान समान विषय सुख, काय कोथली[3] चामकी ॥ जपि० ॥ २ ॥ जैसे चित्रनागके मांथै, थिर मूरति चित्रामकी ।

१ कौएको । २ जहाज । ३ थैली ।

चित आरूढ़ करो प्रभु ऐसें, खोय गुँड़ी परिनामकी ॥ जपि० ॥ ३ ॥ कर्म वैरि अहनिशि[1] छल जोवैं, सुधि न परत पल जामकी। भूधर कैसैं बनत विसारैं, रटना पूरन रामकी ॥ जपि० ॥४॥

४५. राग मलार।

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी ॥ टेक ॥ साधु दिगम्बर नगन निरम्बर, संवरभूषणधारी ॥ वे मुनि० ॥ १ ॥ कंचन काच बराबर जिनके, ज्यौं रिपु त्यौं हितकारी। महल मसान मरन अरु जीवन, सम गरिमा[2] अरु गारी[3] ॥ वे मुनि० ॥ २ ॥ सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी[4]। शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी ॥ वे मुनि० ॥ ३ ॥ जोरि जुगल कर भूधर विनवै, तिन पद ढोक हमारी। भाग उदय दरसन जब पाऊं, ता दिनकी बलिहारी ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

४६. राग धमाल सारंग।

होरी खेलौंगी, घर आये चिदानँद कन्त ॥

---

१ रातादिन। २ महिमा, बडाई। ३ गाली। ४ जलाई।

टेक ॥ शिशिर[1] मिथ्यात गयो आई अब, काललकी लब्धि वसन्त ॥ होरी० ॥ १ ॥ पिय सँग खेलनको हम सखियो ! तरसीं काल अनन्त। भाग फिरे अब फाग रचानौं, आयो विरहको अन्त ॥ होरी० ॥ २ ॥ सरधा गागरमें रुचिरूपी, केसर घोरि तुरन्त । आनँद नीर उमग पिचकारी, छोड़ो नीकी भन्त ॥ होरी० ॥ ३ ॥ आज वियोग कुमति सौतनिके, मेरे हरष महन्त । भूधर धनि यह दिन दुर्लभ अति, सुमति सखी विहसन्त ॥ होरी० ॥ ४ ॥

४७. राग भैरौं ।

*पारस-पद-नख-प्रकाश, अरुन[2] वरन ऐसो ॥ टेक ॥ मानौं तप कुंजरके[3], सीसको सिंदूर पूर, राग दोष काननकौं[4], दावानल जैसो ॥ पारस० ॥ १ ॥ बोधमई प्रातकाल, ताको रवि उदय लाल, मोक्षवधू-कुचप्रलेप, कुंकुमाभ तैसो ॥

---

१ ठडी ऋतु । * यह पद सिन्दूरप्रकरके पहले श्लोक (सिन्दूरप्रकरस्तप करिशिर क्रोडे कषायाटवी) की छाया है । २ लाल । ३ हाथीके । ४ वनको ।

पारस० ॥ २ ॥ कुशलवृक्ष दल उलास, इहि विधि बहु गुणनिवास, भूधरकी भरहु आस, दीन दासके सो ॥ पारस० ॥ ३ ॥

४८. राग धनासरी।

शेष सुरेश नरेश रटैं तोहि, पार न कोई पावै जू ॥ टेक ॥ कांपै नपत [1]व्योम [2]विलसतसौं, को तारे गिन लावै जू ॥ शेष० ॥ १ ॥ कौन सुजान मेघ बूंदनकी, संख्या समुझि सुनावै जू ॥ शेष० ॥ २ ॥ भूधर सुजस गीत संपूरन, [4]गनपति भी नहिं गावै जू ॥ शेष० ॥ ३ ॥

४९. राग रामकली।

आदि पुरुष मेरी आस भरो जी । औगुन मेरे माफ करो जी ॥ टेक ॥ दीनदयाल विरद विसरो जी, कै विनती मोरी श्रवण धरो जी ॥१॥ काल अनादि वस्यो जगमाहीं, तुमसे जगपति जानें नाहीं । पाँय न पूजे अन्तरजामी, यह अपराध क्षमा कर स्वामी ॥ आदि० ॥ २ ॥ भक्ति प्रसाद परम पद है है, बंधी बंध दशा

१ किससे । २ आकाश । ३ विलस्तसे । ४ गणधर ।

मिट जै है। तव न करौं तेरी फिर पूजा, यह अपराध खमौं प्रभु दूजा ॥ आदि० ॥ ३ ॥ भूधर दोष किया वकसावै, अरु आगेकौ लारे लावै। देखो सेवककी ढिठवाई, गरुवे साहिबसौं वनियाँई ॥ आदि० ॥ ४ ॥

५०. राग ख्याल काफी कानडी।

तुम सुनियो साधो!, मनुवा मेरा ज्ञानी। सत गुरु भैंटा संसा मैटा, यह नीकै कारि जानी॥ टेक ॥ चेतनरूप अनूप हमारा, और उपाधि विरानी ॥ तुम सुनियो० ॥ १ ॥ पुदगल भांडा आतम खांडा, यह हिरदै ठहरानी। छीजौ भीजौ कृत्रिम काया, मैं निरभय निरवानी ॥ तुम सुनियो० ॥२॥ मैं ही देखौं मैं ही जानौं, मेरी होय निशानी। शवद फरस रस गंध न धारौं, ये वातैं विज्ञानी ॥ तुम सुनियो० ॥ ३ ॥ जो हम चीन्हां सो थिर कीन्हां, हुए सुदृढ़ सरधानी। भूधर अव कैसें उतरैगा, खड़ग चढ़ा जो पानी ॥ तुम सुनियो० ॥ ४ ॥

१ माफ कराता है। २ ढीठता। ३ वनियांपन। ४ संदेह।

५१. राग काफी ।

प्रभु गुन गाय रे, यह औसर फेर न पाय रे ॥ टेक ॥ मानुष भव जोग दुहेला, दुर्लभ सतसंगति मेला । सब बात भली बन आई, अरहन्त भजौ रे भाई ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ पहलैं चित-चीर[1] सँभारो, कामादिक मैल उतारो । फिर प्रीति फिटकरी दीजे, तब सुमरन रंग रँगीजे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ धन जोर भरा जो कूवा, परवार बढ़ैं क्या हूवा । हाथी चढ़ि क्या कर लीया, प्रभु नाम विनां धिक जीया ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ यह शिक्षा है व्यवहारी, निहचैकी साधनहारी । भूधर पैड़ी पग धरिये, तब चढ़नेको चित करिये ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

५२. राग हागीर कल्याण ।

सुनि सुजान! पांचों[2] रिपु वश करि, सुहित करन असमर्थ अवश करि ॥ टेक ॥ जैसैं जड़ खखार[3]को कीड़ा, सुहित सम्हाल सकैं नहिं फँस करि ॥ सुनि० ॥ १ ॥ पांचनको मुखिया मन चंचल, पहले ताहि पकर रस (?) कस करि । समझ

१ वस्त्र । २ पांचो इन्द्री । ३ कफ ।

देखि नायकके जीतैं, जै है भाजि सहज सव लसकरि ॥ मुनि० ॥ २ ॥ इंद्रियलीन जनम सव खोयो, वाकी चल्यो जात है खस करि। भूधर सीख मान सतगुरुकी, इनसों प्रीति तोरि अव वश करि ॥ मुनि० ॥ ३ ॥

५३. राग गौरी।

देखो भाई ! आतमदेव विराजे ॥ टेक ॥ इसही हूंठ हाथ देवलमैं, केवलरूपी राजे ॥ देखो० ॥ १ ॥ अमल उजास जोतिमय जाकी, मुद्रा मंजुल छाजे । मुनिजनपूज अचल अविनाशी, गुण वरनत बुधि लाजे ॥ देखो० ॥ २ ॥ परसंजोग समल प्रतिभासत, निज गुण मूल न त्याजे। जैसे फटिक पखान हेतसों, श्याम अरुन दुति साजे ॥ देखो० ॥ ३ ॥ 'सोऽहं' पद समतासों ध्यावत, घटहीमैं प्रभु पाजे। भूधर निकट निवास जासुको, गुरु विन भरम न भाजे ॥ देखो० ॥ ४ ॥

---

१ लश्कर—सेना। २ साडेतीन हाथके शरीररूपी मन्दिरमें।

५४. राग ख्याल ।

अब नित नेमि नाम भजौ ॥ टेक ॥ सच्चा साहिब यह निज जानौ, और अदेव तजौ ॥ अब० ॥ १ ॥ चंचल चित्त चरन थिर राखो, विषयनतैं वरजौ ॥ अब० ॥ २ ॥ आननतैं[1] गुन गाय निरन्तर, पानन[2] पांय जजौ[3] ॥ अब० ॥३॥ भूधर जो भवसागर तिरना, भक्ति जहाज सजौ॥अब०॥४॥

५५. राग श्रीगौरी ।

(" माया काली नागिनि जिनें डसिया सब संसार हो " यह चाल ।)

काया गागरि जोजंरी[4], तुम देखो चतुर विचार हो ॥ टेक ॥ जैसें कुल्हिया कांचकी, जाके विनसत नाहीं बार हो ॥ काया० ॥ १ ॥ मांसमयी माटी लई अरु, सानी रुधिर लगाय हो । कीन्हीं करम कुम्हारने, जासों काहूकी न वसाय हो ॥ काया० ॥ २ ॥ और कथा याकी सुनौं, यामैं अध उरध दश ठेह हो । जीव सलिल तहां थंभ रह्यो भाई, अद्भुत अचरज येह हो ॥

१ मुखसे । २ हाथ जोडकर । ३ नमन करो । ४ जरजरित, टूटी हुई ।

काया० ॥ ३ ॥ यासौं ममत निवारकैं, नित रहिये प्रभु अनुकूल हो । भूधर ऐसे ख्यालका भाई, पलक भरोसा भूल हो ॥ काया० ॥ ४ ॥

५६. राग ख्याल वरवा।

("देखनेको आई लाल मै तो तेरे देखनेको आई" यह चाल।)

म्हें तो थाकी आज महिमा जानी ॥ टेक ॥ अव लों नहिं उर आनी ॥ म्हें तो० ॥ १ ॥ काहेको भव वनमें भ्रमते, क्यों होते दुखदानी ॥ म्हें तो० ॥ २ ॥ नामप्रताप तिरे अंजनसे, कीचकसे अभिमानी ॥ म्हें तो० ॥ ३ ॥ ऐसी साख वहुत सुनियत है, जैनपुराण वखानी ॥ म्हें तो० ॥ ४ ॥ भूधरको सेवा वर दीजे, मैं जांचक तुम दानी ॥ म्हें तो० ॥ ५ ॥

५७. राग विहाग।

अरे मन चल रे, श्रीहथनापुरकी जातं[1] ॥ टेक ॥ रामा[2] रामा धन धन करते, जावै जनम विफल रे ॥ अरे० ॥ १ ॥ करि तीरथ जप तप जिनपूजा, लालच वैरी दल रे ॥ अरे० ॥ २ ॥

---

१ यात्राको। २ स्त्री।

शांति कुंथु अर तीनों जिनका, चारु कल्याण-कथल रे ॥ अरे० ॥ ३ ॥ जा दरसत परसत सुख उपजत, जाहिं सकल अघ गल रे ॥ अरे० ॥४॥ देश दिशन्तरके जन आवैं, गावैं जिन गुन रल रे ॥ अरे० ॥ ५ ॥ तीरथ गमन सहामी मेला, एक पंथ द्वै फल रे ॥ अरे० ॥ ६ ॥ कायाके संग काल फिरै है, तन छायाके छल रे ॥ अरे० ॥ ७ ॥ माया मोह जाल बंधनसौं, भूधर वेगि निकल रे ॥ अरे० ॥ ८ ॥

५८.-राग विहाग।

जगत जन जूवा हारि चले ॥ टेक ॥ काम कुटिल सँग बाजी माँडी, उन करि कपट छले ॥ जगत० ॥ १ ॥ चार कषायमयी जहँ चौपरि, पांसे जोग रले । इत सरवस उत कामिनी कौड़ी, इह विधि झटक चले । जगत० ॥ २ ॥ क्रूर खिलार विचार न कीन्हों, है हैं ख्वार भले । विनां विवेक मनोरथ काके, भूधर सफल ो । जगत० ॥ ३ ॥

५९. राग विहाग।

तहां लै चल री! जहां जादौपति प्यारो ॥ टेक ॥ नेमि निशाकर विन यह चन्दा, तन मन दहत सकल री। तहां० ॥ १ ॥ किरन किधौं नाविक-शर-तति कै, ज्यों पावककी झल री। तारे हैं कि अँगारे सजनी, रजनी [1]राकसदल री। तहां० ॥ २ ॥ इह विधि राजुल राजकुमारी, विरह तपी वेकल री। भूधर धन्न [2]शिवासुत [3]बादर, वरसायो [4]समजल री। तहां० ॥ ३ ॥

६०. राग ख्याल।

अरे! हां चेतो रे भाई ॥ टेक ॥ [5]मानुष देह लही दुलही, सुघरी उघरी सतसंगति पाई। अरे हां० ॥ १ ॥ जे करनी वरनी करनी नहिं, ते समझी करनी समझाई। अरे हां० ॥२॥ यों शुभ थान जग्यो उर ज्ञान, विषैविषपान तृषा न वुझाई। अरे हां० ॥ ३ ॥ पारस पाय सुधा-

---

१ राक्षस। २ शिवादेवीके पुत्र नेमि। ३ बादल—मेघ। ४ शम-समतारूपी जल। ५ टेक छोड़कर पढ़नेसे इस पदका एक मत्तगयन्द (तेईसा) सवैया वन जाता है।

रस भूधर, भीखकेमाहिं सुलाज न आई। अरे हां० ॥ ४ ॥

६१. राग सोरठ।

सो गुरुदेव हमारा है साधो ॥ टेक ॥ जोग अगनिमें जो थिर राखै, यह चित चंचल पारा है ॥ सो गुरु० ॥ १ ॥ करन[1] कुरंग खरे मद-माते, जप तप खेत उजारा[2] है। संजम डोर जोर वश कीने, ऐसा ज्ञान विचारा है ॥ सो गुरु० ॥ २ ॥ जा लक्ष्मीको सब जग चाहै, दास हुआ जग सारा है। सो प्रभुके चरननकी चेरी, देखो अचरज भारा है ॥ सो गुरु० ॥ ३ ॥ लोभ सरपके कहर जहरकी, लहर गई दुख टारा है। भूधर ता रिखका[3] शिख[4] हूजे, तब कछु होय सुधारा है ॥ सो गुरु० ॥ ४ ॥

६२. राग सोरठ।

स्वामीजी सांची सरन तुम्हारी ॥ टेक ॥ समरथ शांत सकल गुनपूरे, भयो भरोसो भारी ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ जनम जरा जग बैरी

---

१ इन्द्रिय। २ उजाडा, नष्ट किया। ३ ऋषि-मुनिका। ४ शिष्य।

जीते, टेव मरनकी टारी । हमहूको अजरामर करियो, भरियो आस हमारी ॥ स्वामी० ॥२॥ जनमैं मरैं धरैं तन फिरि फिरि, सो साहिव संसारी । भूधर परदालिद क्यों दलि है, जो है आप भिखारी ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

६३.

जीवदया व्रत तरु वड़ो, पालो पालो वड़-भाग ॥ टेक ॥ कीड़ी कुंजर कुंथुवा, जेते जग-जन्त । आप सरीखे देखिये, करिये नहिं भन्त[1] ॥ जीवदया० ॥ १ ॥ जैसे अपने हीयँडे[2], प्यारे निज प्रान । त्यों सवहीकों लाड़िये, निहचै यह जान ॥ जीवदया० ॥ २ ॥ फांस चुभै टुक देहमें, कछु नाहिं सुहाय । त्यों परदुखकी वे-दना, समझो मन लाय ॥ जीवदया० ॥ ३ ॥ मन वचसौं अर कायसौं, करिये परकाज । किसहीकों न सताइये, सिखवैं रिखिराज ॥ जीव-दया० ॥ ४ ॥ करुना जगकी मायँडी[3], धींजैं[4] सव कोय । धिग! धिग! निरदय भावना, कंपैं

---

१ भेद । २ दिलमें । ३ माता । ४ प्रतीति करें ।

जिय जोय ॥ जीवदया० ॥ ५ ॥ सब दंसण[1] सव लोयमें[2], सब कालमँझार । यह करनी बहु शंसिये[3], ऐसो गुणसार ॥ जीवदया० ॥ ६ ॥ निरदै नर भी संस्तुवै[4], निंदै कोइ नाहिं । पालें विरले साहसी, धनि वे जगमाहिं ॥ जीवदया० ॥ ७ ॥ पर सुखसौं सुख होय, पर-पीड़ासौं पीर । भूधर जो चित चाहिये, सोई कर बीर! ॥ जीवदया० ॥ ८ ॥

६४.

ऐसो श्रावक कुल तुम पाय, वृथा क्यों खोवत हो ॥ टेक ॥ कठिन कठिनकर नरभव पाई, तुम लेखी आसान । धर्म विसारि विषयमें राचौ, मानी न गुरुकी आन ॥ वृथा० ॥ १ ॥ चक्री एक मतंगज पायो, तापर ईंधन ढोयो । विना विवेक विना मतिहीको, पाय सुधा पग धोयो ॥ वृथा० ॥ २ ॥ काहू शठ चिन्तामणि पायो, मरम न जानो ताय । वायस देखि उदधिमें फैंक्यो, फिर पीछे पछताय ॥ वृथा० ॥ ३ ॥

१ दर्शनोंमें–धर्मोंमें । २ लोकमें । ३ सराहिए । ४ स्तुति करे ।

सात विसन आठों मद त्यागो, करुना चित्त विचारो। तीन रतन हिरदैमें धारो, आवागमन निवारो ॥ वृथा० ॥ ४ ॥ भूधरदास कहत भविजनसों. चेतन अव तो सम्हारो। प्रभुको नाम तरन तारन जपि, कर्मफन्द निरवारो ॥ वृथा० ॥ ५ ॥

६५. राग ख्याल।

नैननिको वान परी, दरसनकी ॥ टेक ॥ जिनमुखचन्द चकोर चित्त मुझ, ऐसी प्रीति करी ॥ नैन० ॥ १ ॥ और अदेवनके चितवनको अव चित चाह टरी। ज्यों सव धूलि दवै दिशि दिशिकी, लागत मेघझरी ॥ नैन० ॥२॥ छवी समाय रही लोचनमें, विसरत नाहिं घरी। भूधर कह यह टेव रहो थिर, जनम जनम हमरी ॥ नैन० ॥ ३ ॥

६६. चाल गोपीचन्दकी।

यह तन जंगम रूखंड़ा, सुनियो भवि प्रानी। एक वूंद इस वीच है, कछु वात न छांनी ॥ टेक ॥

---

१ वृक्ष। २ छुपी।

गरभ खेतमें मास नौ, निजरूप दुराया । बाल अंकुरा बढ़ गया, तब नजरों आया ॥ १ ॥ अस्थिरसा भीतर भया, जानै सब कोई । चाम त्वचा ऊपर चढ़ी, देखो सब लोई ॥ २ ॥ अधो अंग जिस पेड़ है, लख लेहु सयाना । भुज शाखा दल आँगुरी, दृग फूल रवाँना ॥ ३ ॥ वनिता बेलि सुहावनी, आलिंगन कीया । पुत्रादिक पंछी तहां, उड़ि बासा लिया ॥ ४ ॥ निरख विरख बहु सोहना, सबके मनमाना । स्वजन लोग छाया तकी, निज स्वारथ जाना ॥ ५ ॥ काम भोग फलसों फला, मन देखि लुभाया । चाखतके मीठे लगे, पीछें पछताया ॥ ६ ॥ जरादि बलसों छबि घटी, किसही न सुहाया । काल अगनि जब लहलही, तब खोज न पाया ॥ ७ ॥ यह मानुष द्रुमकी दशा, हिरदै धरि लीजे । ज्यों हूवा त्यों जाय है, कछु जतन करीजे ॥८॥ धर्म सलिलसों सींचिकै, तप धूप दिखइये । सुरग फल तब लगैं, भूधर सुख पइये ॥ ९ ॥

१ रमणीय । २ वृक्ष । ३ पता ।

६७. कालिंगडा।

(" गर्गेन्द्र जुलाहा ताना कौन बुनेगा " इस चालमें।)

चरखा चलता नाहीं, चरखा हुआ पुराना ॥ टेक ॥ पग खूंटे दो हालन लागे, उर मदरा खखराना। छीदी हुई पांखड़ी पांसू, फिरै नहीं मनमाना ॥ चरखा० ॥ १ ॥ रसना तकलीने बल खाया, सो अब कैसें खूटै ॥ शबद सूत सूधा नहिं निकसै; घड़ी घड़ी पल टूटै ॥ चरखा० ॥ २ ॥ आयु मालका नहीं भरोसा, अंग चलाचल सारे। रोज इलाज मरम्मत चाहै, वैद बाढ़ही हारे ॥ चरखा० ॥ ३ ॥ नया चरखला रंगा चंगा, सबका चित्त चुरावै। पलटा वरन गये गुन अगले, अब देखें नहिं भावै ॥ चरखा० ॥ ४ ॥ मोटा महीं कातकर भाई !, कर अपना सुरझेरा ॥ अंत आगमें ईंधन होगा, भूधर समझ सवेरा ॥ चरखा० ॥ ५ ॥

६८. आरती।

आरती आदि जिनिंद तुम्हारी, नाभिकुमार कनकछविधारी ॥ आरती० ॥ टेक ॥ जुगकी

आदि प्रजा प्रतिपाली, सकल जननकी आरति टाली ॥ आरती० ॥ १ ॥ वांछापूरन सबके स्वामी, प्रगट भये प्रभु अंतरजामी ॥ आरती० ॥ २ ॥ कोटभानुद्युत आभा तनकी, चाहत चाह मिटै नहिं तनकी ॥ आरती० ॥ ३ ॥ नाटक निरखि परम पद ध्यायो, राग थान वैराग उपायो ॥ आरती० ॥ ४ ॥ आदि जगतगुरु आदि विधाता, सुरग मुकति मारगके दाता ॥ आरती० ॥ ५ ॥ दीनदयाल दया अब कीजे, भूधर सेवकको ढिग लीजे ॥ आरती० ॥ ६ ॥

६९. राग सलहामारू ।

सुनि सुनि हे साथनि ! म्हारे मनकी बात । सुरति सखीसों सुमति राणी यों कहै जी । बीत्यो हे साथनि म्हारी ! दीरघकाल, म्हारो सनेही म्हारे घर ना रहै जी ॥ १ ॥ ना वरज्यो रहै साथनि म्हारी चेतनराव, कारज अधम अचेतनके करै जी । दुरमति है साथनि म्हारी जात कुजात, सोई चिदातम पियको

चित्त हरै जी ॥ २ ॥ सिखयौ हे साथनि म्हारी केती वार, क्यों हीं कियो हठी हठ एरी हरै जी । कीजे हो साथनि म्हारी कौन उपाय, अव यह विरह विथा नहिं सही परै जी ॥ ३ ॥ चलि चलि री साथनि म्हारी, जिनजीके पास, वे उपगारी इसैं समझावसी जी । जगसी हे सखी म्हारे मस्तक भाग, जो म्हारौ कंथ समझि घर आवसी जी ॥ ४ ॥ कारज हे सखी म्हारी ! सिद्ध न होय, जव लग काललवधि-वल नहिं भलो जी । तो पण हे सखी म्हारी उद्यम जोग, सीख सयानी भूधर मन सांभलो जी ॥ ५ ॥

७०. जकड़ी।

अव मन मेरे वे !, सुनि सुनि सीख सयानी। जिनवर चरना वे !, करि करि प्रीति सुज्ञानी ॥ करि प्रीति सुज्ञानी ! शिवसुखदानी, धन जीतव है पंचदिना । कोटि वरष जीवौ किस लेखे, जिन चरणांवुजभक्ति विना ॥ नर परजाय पाय अति उत्तम, गृह वसि यह लाहा ले रे !। समझ समझ

बोलैं गुरुज्ञानी, सीख सयानी मन मेरे ॥ १ ॥
तू मति तरसै वे !, सम्पतिं देखि पराई । बोये
लुनि ले वे !, जो निज पूर्व कमाई ॥ पूर्व कमाई
सम्पाति पाई, देखि देखि मति झूर मरै । बोय
बँबूल शूल-तरु भोंदू !, अम्रमनकी क्या आस
करै ॥ अब कछु समझ बूझ नर तासों, ज्यों
फिर परभव सुख दरसै । करि निजध्यान दान
तप संजम, देखि विभव पर मत तरसै ॥ २ ॥
जो जग दीसै वे !, सुंदर अरु सुखदाई । सो सब
फलिया वे !, धरमकल्पद्रुम भाई ! ॥ सो सब धर्म
कल्पद्रुमके फल, रथ पायक बहु ऋद्धि सही ।
तेज तुरंग तुंग गज नौ निधि, चौदह रतन
छखण्ड मही ॥ रति उनहार रूपकी सीमा, सहस
छ्यानवै नारि वरै । सो सब जानि धर्मफल भाई!
जो जग सुंदर दृष्टि परै ॥ ३ ॥ लगैं असुंदर वे !,
कंटक वान घनेरे । ते रस फलिया वे !, पाप
कनक-तरु केरे ॥ ते सब पाप कनकतरुके फल,
सोग दुख नित्य नये । कुथित शरीर
चीर नहिं तापर, घर घर फिरत फकीर भये ॥

भूख प्यास पीड़ैं कन मांगैं, होत अनादर पग पगमें। ये परतच्छ पाप संचित फल, लगैं असुंदर जे जगमें ॥ ४ ॥ इस भव वनमें वे!, ये दोऊ तरु जाने। जो मन माने वे!, सोई सींचि सयाने ॥ सींचि सयाने! जो मन माने, वेर वेर अव कौन कहै। तू करतार तुही फल-भोगी, अपने सुख दुख आप लहै ॥ धन्य! धन्य! जिन मारग सुंदर, सेवन जोग तिहूँ पनमें। जासों समुझि परे सब भूधर, सदा शरण इस भववनमें ॥ ५ ॥

७१. विनती।

हरिगीतिका।

पुलकन्त नयन चकोर पक्षी, हँसत उर इन्दीवरो। दुर्बुद्धि चकवी विलख विछुरी, निविड़ मिथ्यातम हरो ॥ आनन्द अम्बुज उमग उछर्यो, अखिल आतम निरदले। जिनवदन पूरनचन्द्र निरखत, सकल मनवांछित फले ॥ १ ॥ मुझ आज आतम भयो पावन, आज विघ्न विनाशियो। संसारसागर नीर निवट्यो, अखिल

तत्त्व प्रकाशियो ॥ अब भई कमला किंकरी मुझ, उभय भव निर्मल ठये । दुख जरो दुर्गति-वास निवरो, आज नव मंगल भये ॥ २ ॥ मनहरन मूरति हेरि प्रभुकी, कौन उपमा लाइये । मम सकल तनके रोम हुलसे, हर्ष ओर न पाइये ॥ कल्याणकाल प्रतच्छ प्रभुको, लखें जो सुर नर घने । तिस समयकी आनन्दमहिमा, कहत क्यों मुखसों बने ॥३॥ भर नयन निरखे नाथ तुमको, और वांछा ना रही । मन ठठ मनोरथ भये पूरन, रंक मानो निधि लही ॥ अब होय भव भव भक्ति तुम्हरी, कृपा ऐसी कीजिये । कर जोर 'भूधरदास' विनवै, यही वर मोहि दीजिये ॥ ४ ॥

७२. विनती ।

तुम तरनतारन भवनिवारन, भविक-मनआनन्दनो । श्रीनाभिनन्दन जगतवन्दन, आदिनाथ जिनिन्दनो ॥ तुम आदिनाथ अनादि सेऊं, सेय पद पूजा करों । कैलाशगिरिपर ऋषभ जिनवर, चरणकमल हृदय धरों ॥ १ ॥

तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली। यह जानकर तुम शरण आयो, कृपा कीजे नाथ जी॥ तुम चन्द्रवदन सुचन्द्रलक्षण, चन्द्रपुरिपरमेशजू। महासेननन्दन जगतवंदन, चन्द्रनाथ जिनेशजू॥ २॥ तुम वालवोधविवेकसागर, भव्यकमलप्रकाशनो। श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो॥ तुम तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश करी। चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवसुन्दरि वरी॥ ३॥ इन्द्रादि जन्मस्थान जिनके, करन कनकाचल चढ़े। गंधर्व देवन सुयश गाये, अपसरा मंगल पढ़े॥ इहि विधि सुरासुर निज नियोगी, सकल सेवाविधि ठही। ते पार्श्व प्रभु मो आस पूरो, चरनसेवक हों सही॥ ४॥ तुम ज्ञान रवि अज्ञानतमहर, सेवकन सुख देत हो। मम कुमतिहारन सुमतिकारन, दुरित सब हर लेत हो॥ तुम मोक्षदाता कर्मघाता, दीन जानि दया करो। सिद्धार्थनन्दन जगतवन्दन, महावीर जिनेश्वरो॥ ५॥

चौवीस तीर्थंकर सुजिनको, नमत सुरनर आयके। मैं शरण आयो हर्ष पायो, जोर कर सिर नायके॥ तुम तरनतारन हो प्रभूजी, मोहि पार उतारियो। मैं हीन दीन दयालु प्रभुजी, काज मेरो सारियो॥ ६॥ यह अतुलमहिमासिन्धु साहब, शक्र पार न पावही। तजि हासभय तुम दास भूधर, भक्तिवश यश गावही॥ ७॥

७३. गुरुविनती।

बन्दौं दिगम्बरगुरुचरन, जग तरन तारन जान। जे भरम भारी रोगको, हैं राजवैद्य महान॥ जिनके अनुग्रह विन कभी, नहिं कटैं कर्म जँजीर। ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर॥ १॥ यह तन अपावन अशुचि है, संसार सकल असार। ये भोग विष पकवानसे, इस भाँति सोच विचार॥ तप विरचि श्रीमुनि वन वसे, सब त्यागि परिग्रह भीर। ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर॥ २॥ जे काच कंचन सम गिनैं. अरि मित्र एक सरूप।

निंदा वड़ाई सारिखी, वनखण्ड शहर अनूप ॥ सुख दुःख जीवन मरनमें, नहिं खुशी नहिं दिलगीर। ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ३ ॥ जे वाह्य परवत वन वसैं, गिरि गुहा महल मनोग। सिल सेज समता सहचरी, शशिकिरण दीपक जोग ॥ मृग मित्र भोजन तपमई, विज्ञान निरमल नीर। ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ४ ॥ सुखें सरोवर जल भरे, सूखै तरंगनितोय। वाटें वटोही ना चलैं, जहां घाम गरमी होय ॥ तिस काल मुनिवर तप तपैं, गिरिशिखर ठाड़े धीर। ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ५ ॥ घन घोर गरजैं घनघटा, जल परै पावसकाल। चहुँ ओर चमकै वीजुरी, अति चलै शीतल व्याल ॥ तरुहेट तिष्ठै तव जती, एकान्त अचल शरीर। ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ६ ॥ जव-शीत मास तुपारसों, दाहै सकल वनराय। जव

१ समान, बरावर। २ नदीका जल। ३ रास्तेसे। ४ मुसाफिर। ५ बरसातमें। ६ पवन। ७ वृक्षके नीचे।

जमै पानी पोखरां, थरहरै सबकी काय ॥ तब नगन निवसैं चौहटैं[1], अथवा नदीके तीर । ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ७ ॥ कर जोर भूधर बीनवै, कब मिलैं वह मुनिराज । यह आस मनकी कब फलै, मेरे सरैं[2] सगरे[3] काज ॥ संसार विषम विदेशमें, जे विना कारण वीर । ते साधु मेरे मन वसो, मेरी हरो पातक पीर ॥ ८ ॥

७४. विनती ।

(चौपाई १६ मात्रा ।)

जै जगपूज परमगुरु नामी, पतित उधारन अंतरजामी । दास दुखी तुम अति उपगारी, सुनिये प्रभु! अरदास हमारी ॥ १ ॥ यह भव घोर समुद्र महा है, भूधर भ्रम-जल-पूर रहा है । अंतर दुख दुःसह बहुतेरे, ते बड़वानल साहिब मेरे ॥ २ ॥ जनम जरा गद मरन जहां है, ये ही प्रबल तरंग तहां है । आवत विपति नदीगन जामें, मोह महान मगर इक तामें ॥ ३ ॥ तिस मुख जीव पर्यो दुख पावै, हे जिन ! तुम विन कौन छुड़ावै ।

१ चौपटमैदान । २ सिद्ध होवें । ३ सब ।

अशरन-शरन अनुग्रह कीजे, यह दुख मेटि सुकति मुझ दीजे ॥ ४ ॥ दीरघ काल गयो विललावें, अव ये सूल सहे नहिं जावें। सुनि-यत यों जिनशासनमाहीं, पंचम काल परमपद नाहीं ॥ ५ ॥ कारन पांच मिलैं जव सारे, तब शिव सेवक जाहिं तुम्हारे। तातैं यह विनती अव मेरी, स्वामी! शरण लई हम तेरी ॥ ६। प्रभु आगैं चितचाह प्रकासौं, भव भव श्रावक कुल अभिलासौं। भव भव जिन आगम अव-गाहौं, भव भव भक्ति शरणकी चाहौं ॥ ७ ॥ भव भवमें सत संगति पाऊं, भव भव साधनके गुन गाऊं। परनिंदा मुख भूलि न भाखूं, मैत्रीभाव सबनसों राखूं ॥८॥ भव भव अनुभव आतमकेरा, होहु समाधिमरण नित मेरा। जवलौं जनम जगतमें लाधौं, काललवधि वल लहि शिव साधौं ॥९॥ तवलौं ये प्रापति मुझ हूजौ, भक्ति प्रताप मनोरथ पूजौ। प्रभु सव समरथ हम यह लौरैं, भूधर अरज करत कर जोरैं ॥ १० ॥

७५. नेमिनाथजीकी विनती।

त्रिभुवनगुरु स्वामी जी, करुनानिधि नामी जी। सुनि अंतरजामी, मेरी वीनती जी॥ १॥ मैं दास तुम्हारा जी, दुखिया बहु भारा जी। दुख मेटनहारा, तुम जादोंपती जी॥ २॥ भरम्यो संसारा जी, चिर विपति-भँडारा जी। कहिं सार न सारे, चहुँगति डोलियो जी॥ ३॥ दुख मेरु समाना जी, सुख सरसों-दाना जी। अब जान धरि ज्ञान, तराजू तोलिया जी॥ ४॥ थावर तन पाया जी, त्रस नाम धराया जी। कृमि कुंथु कहाया, मरि भँवरा हुवा जी॥५॥ पशुकाया सारी जी, नाना विधि धारी जी। जलचारी थलचारी, उड़न पखेरु हुवा जी॥ ६॥ नरक-नकेमाहीं जी, दुख ओर न काहीं जी। अति घोर जहाँ है, सरिता खारकी जी॥ ७॥ पुनि असुर संघारैं जी, निज वैर विचारैं जी। मिलि बांधैं अर मारैं, निरदय नारकी जी॥८॥ मानुष अवतारै जी, रह्यो गरभमँझारै जी। रटि जनमत, वारैं मैं घनों जी॥ ९॥ जो-

वन तन रोगी जी, कै विरहवियोगी जी। फिर
भोगी वहुविधि, विरधपनाकी वेदना जी ॥१०॥
सुरपदवी पाई जी, रंभा उर लाई जी। तहाँ
देखि पराई, संपति झूरियो जी ॥ ११ ॥ माला
मुरझानी जी, तव आरति ठानी जी। तिथि
पूरन जानी, मरत विसूरियों जी ॥ १२ ॥ यों
दुख भवकेरा जी, भुगतो वहुतेरा जी। प्रभु!
मेरे कहतें, पार न है कहीं जी ॥ १३ ॥ मि-
थ्यामदमाता जी, चाही नित साता जी। सुख-
दाता जगत्राता, तुम जाने नहीं जी ॥ १४ ॥
प्रभु भागनि पाये जी, गुन श्रवन सुहाये जी।
तकि आयो अव सेवककी, विपदा हरो जी
॥ १५ ॥ भववास वसेरा जी, फिरि होय न
मेरा जी। सुख पावै जन तेरा, स्वामी! सो
करो जी ॥ १६ ॥ तुम शरनसहाई जी, तुम
सज्जनभाई जी। तुम माई तुम्हीं वाप, दया
मुझ लीजिये जी ॥ १७ ॥ भूधर कर जोरे जी,
ठाड़ो प्रभु ओरै जी। निजदास निहारो, निर-
भय कीजिये जी ॥ १८ ॥

७६. विनती।

(ढाल परमादी।)

अहो! जगतगुरु एक, सुनियो अरज हमारी। तुम हो दीन दयाल, मैं दुखिया संसारी ॥ १ ॥ इस भव वनमें वादि, काल अनादि गमायो। भ्रमत चहूँगतिमाहिं, सुख नहिं दुख बहु पायो ॥ २ ॥ कर्म महारिपु जोर, एक न कान करैं जी। मनमान्यां दुख देहिं, काहूसों न डरैं जी ॥ ३ ॥ कबहूं इतर निगोद, कबहू नर्क दिखावैं। सुरनर पशुगतिमाहिं, बहुविधि नाच नचावैं ॥ ४ ॥ प्रभु! इनके परसंग, भव भवमाहिं बुरे जी। जे दुख देखे देव!, तुमसों नाहिं दुरे जी ॥ ५ ॥ एक जन्मकी बात, कहि न सकों सुनि स्वामी!। तुम अनन्त परजाय, जानत अंतरजामी ॥ ६ ॥ मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे। कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे ॥ ७ ॥ ज्ञान महानिधि लूटि, रंक निबल करि डास्यो। इनही तुम मुझमाहिं, हे जिन! अंतर पास्यो ॥ ८ ॥ पाप पुन्यकी

दोइ, पाँयनि वेरी डारी । तन काराग्रहमाहिं, मोहि दियो दुख भारी ॥ ९ ॥ इनको नेक विगार, मैं कछु नाहिं कियो जी । विनकारन जगवंद्य !, वहुविधि वैर लियो जी ॥ १० ॥ अव आयो तुम पास, सुनि जिन ! सुजस तिहारो । नीतनिपुन जगराय !, कीजे न्याव हमारो ॥११॥ दुष्टन देहु निकास, साधुनकों रखि लीजे । विनवै भूधरदास, हे प्रभु ! ढील न कीजे ॥ १२ ॥

७७. गुरुकी विनती ।

(राग—भरतरी । दोहा ।)

ते गुरु मेरे मन वसो, जे भव जलधि जिहाज । आप तिरैं पर तारहीं, ऐसे श्रीऋषिराज ॥ ते गुरु० ॥ १ ॥ मोह महारिपु जीतिकैं, छांड्यो सव घरवार । होय दिगम्बर वन वसे, आतम शुद्ध विचार ॥ ते गुरु० ॥ २ ॥ रोग-उरग-विल[1] वपु[2] गिण्यो, भोग भुजंग समान । कदली तरु संसार है, त्यागो सव यह जान ॥ ते गुरु० ॥ ३ ॥ रतनत्रय निधि उर धरै, अरु

---

१ रोगरूपी सर्पका विल । २ शरीर ।

निरग्रंथ त्रिकाल । मार्‌यो काम खवीसको, स्वामी परम दयाल ॥ ते गुरु० ॥ ४ ॥ पंच महाव्रत आदरैं, पांचों सुमति समेत । तीन गुपति पालैं सदा, अजर अमर पद हेत ॥ ते गुरु० ॥५॥ धर्म धरैं दशलक्षणी, भावैं भावना सार । सहैं परीसह बीस द्वै, चारित-रतन-भँडार ॥ ते गुरु० ॥ ६ ॥ जेठ तपै रवि आकरो[1], सूखै सरवरनीर । शैल-शिखर मुनि तप तपैं, दाझैं[2] नगन शरीर ॥ ते गुरु० ॥ ७ ॥ पावस रैन डरावनी, वरसै जलधर-धार । तरुतल निवसैं साहसी, बाजै[3] झंझावार ॥ ते गुरु० ॥ ८ ॥ शीत पड़ै कपि-मद गलै, दाहै सब वनराय । ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥ ते गुरु० ॥ ९ ॥ इहि विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमँझार । लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥ ते गुरु० ॥ १० ॥ पूरव भोग न चिंतवैं, आगम वांछा नाहिं । चहुँगतिके दुखसों डरैं, सुरति लगी शिव-

---

१ तेजीसे । २ जलावै । ३ चलती है । ४ बरसाती हवाको ..। कहते हैं ।

माहिं ॥ ते गुरु० ॥ ११ ॥ रंगमहलमें पौढ़ते, कोमल सेज बिछाय। ते पच्छिमनिशि भूमिमें, सोवैं संवरि काय ॥ ते गुरु० ॥ १२ ॥ गज चढ़ि चलते गरवसों, सेना सजि चतुरंग। निरखि निरखि पग वे धरैं, पालैं करुणा अंग ॥ ते गुरु० ॥ १३ ॥ वे गुरु चरण जहां धरैं, जगमें तीरथ जेह। सो रज मम मस्तक चढ़ौ, भूधर मांगै येह ॥ ते गुरु० ॥ १४ ॥

७८. पंचनमोकारमंत्रमाहात्म्यकी ढाल।

श्रीगुरु शिक्षा देत हैं, सुनि प्रानी रे! सुमर मंत्र नौकार, सीख सुनि प्रानी रे! लोकोत्तम मंगल महा, सुनि प्रानी रे! अशरन-जन-आधार, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १ ॥ प्राकृत रूप अनादि है, सुनि प्रानी रे! मित अच्छर पैंतीस, सीख सुनि प्रानी रे! पाप जाय सब जापतैं, सुनि प्रानी रे! भाष्यो गणधरईश, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ २ ॥ मन पवित्र करि मंत्रको, सुनि प्रानी रे! सुमरै शंका छोरि, सीख सुनि प्रानी रे! वांछित वर पावै सही, सुनि प्रानी रे!

शीलवंत नर नारि, सीख सुनि प्रानी रे! ॥३॥ विषधर-बाघ न भय करै, सुनि प्रानी रे! विनसैं विघन अनेक, सीख सुनि प्रानी रे! व्याधि विषम-विंतर भजैं, सुनि प्रानी रे! विपत न व्यापै एक, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ ४ ॥ कपिको शिखरसमेदपै, सुनि प्रानी रे! मंत्र दियो मुनिराज, सीख सुनि प्रानी रे! होय अमर नर शिव वस्यो, सुनि प्रानी रे! धरि चौथी परजाय, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ ५ ॥ कह्यो पदमरुचि सेठने, सुनि प्रानी रे! सुन्यो बैलके जीव, सीख सुनि प्रानी रे! नर सुरके सुख भुंजके, सुनि प्रानी रे! भयो राव सुग्रीव, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ ६ ॥ दीनों मंत्र सुलोचना, सुनि प्रानी रे! विंध्यश्रीको जोइ, सीख सुनि प्रानी रे! गंगादेवी अवतरी, सुनि प्रानी रे! सर्प-डसी थी सोइ, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ ७ ॥ चारुदत्तपै वनिकने, सुनि प्रानी रे! पायो कूपमँझार[1], सीख सुनि प्रानी रे! पर्वत ऊपर छागने, सुनि प्रानी रे! भये जुगम सुर सार,

१ बकरेने।

सीख सुनि प्रानी रे! ॥ ८ ॥ नाग नागिनी जलत हैं, सुनि प्रानी रे! देखे पासजिनिंद, सीख सुनि प्रानी रे! मंत्र देत तव ही भये, सुनि प्रानी रे! परमावति धरनेंद्र, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ ९ ॥ चेहलेमें[1] हथिनी फँसी, सुनि प्रानी रे! खग[2] कीनों उपगार, सीख सुनि प्रानी रे! भव लहिकै सीता भई, सुनि प्रानी रे! परम सती संसार, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १० ॥ जल माँगै शूली चढ्यो, सुनि प्रानी रे! चोर कंठ-गत-प्रान, सीख सुनि प्रानी रे! मंत्र सिखायो सेठने, सुनि प्रानी रे! लह्यो सुरग सुखथान, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ ११ ॥ चंपापुरमें ग्वालिया, सुनि प्रानी रे! घोखै मंत्र महान, सीख सुनि प्रानी रे! सेठ सुदर्शन अवतर्‌यो, सुनि प्रानी रे! पहले भव निरवान, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १२ ॥ मंत्र महातमकी कथा, सुनि प्रानी रे! नामसूचना एह, सीख सुनि प्रानी रे! श्रीपुन्यास्त्रवग्रंथमें, सुनि प्रानी रे! तारे सो सुनि

1 कीचड़में। 2 विद्याधरने।

लेहु, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १३ ॥ सात-विसन सेवन हठी, सुनि प्रानी रे! अधम अंजना चोर, सीख सुनि प्रानी रे! सरधा करते मंत्रकी, सुनि प्रानी रे! सीझी विद्या जोर, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १४ ॥ जीवंक सेठ समोधियो, सुनि प्रानी रे! पापाचारी स्वान, सीख सुनि प्रानी रे! मंत्र प्रतापैं पाइयो, सुनि प्रानी रे! सुंदर सुरग विमान, सीख सुनि प्रानी रे! ॥१५॥ आगैं सीझे सीझि है, सुनि प्रानी रे! अब सीझैं निरधार, सीख सुनि प्रानी रे! तिनके नाम बखानतैं, सुनि प्रानी रे! कोई न पावै पार, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १६ ॥ बैठत चिंतै सोवतैं, सुनि प्रानी रे! आदि अंतलौं धीर, सीख सुनि प्रानी रे! इस अपराजित मंत्रको, सुनि प्रानी रे! मति बिसरै हो! वीर, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १७ ॥ सकल लोक सब कालमें, सुनि प्रानी रे! सरवागममें सार, सीख सुनि प्रानी रे! भूधर कबहुं न भूलि है, सुनि प्रानी रे! मंत्रराज मन धार, सीख सुनि प्रानी रे! ॥ १८ ॥

---

१ जीवंधरने।

७९. करुणाष्टक[1]।

करुणा ल्यो जिनराज हमारी, करुणा ल्यो ॥ टेक ॥ अहो जगतगुरु जगपती, परमानंदनिधान। किंकरपर कीजे दया, दीजे अविचल थान ॥ हमारी० ॥ १ ॥ भवदुखसों भयभीत हौं, शिवपदवांछा सार। करो दया मुझ दीनपै, भवबंधन निरवार ॥ हमारी० ॥ २ ॥ पस्यो विषम भवकूपमें, हे प्रभु! काढ़ो मोहि। पतितउधारण हो तुम्हीं, फिर फिर विनऊं तोहि ॥ हमारी० ॥ ३ ॥ तुम प्रभु परमदयाल हो, अशरणके आधार। मोहि दुष्ट दुख देत हैं, तुमसों करहुँ पुकार ॥ हमारी० ॥ ४ ॥ दुःखित देखि दया करै, गाँवपती इक होय। तुम त्रिभुवनपति कर्मतैं, क्यों न छुड़ावो मोय ॥ हमारी० ॥ ५ ॥ भव-आताप तबै भुजैं, जब राखों उर धोय। दया-सुधा करि सीयरा, तुम पदपंकज दोय ॥ हमारी० ॥ ६ ॥ येहि एक मुझ वीनती, स्वामी! हर संसार। बहुत धज्यो हू त्रासतैं, विलख्यो वारंवार ॥ हमारी० ॥ ७ ॥ पंदमनंदिको

१ श्रीपद्मनन्दिआचार्यकृत पचविंशतिकाके करुणाष्टकका आशय लेकर।

अर्थ लैं, अरज करी हितकाज । शरणागत भूधरतणी, राखौ जगपति लाज ॥ हमारी० ॥८॥

/८०. गजल ।

रखता नहीं तनकी खबर, अनहद बाजा बाजियां। घटबीच मंडल वाजता, बाहिर सुना तो क्या हुआ ॥ १ ॥ जोगी तो जंगम सेवड़ा, बहु लाल कपड़े पहिरता। उस रंगसे महरम नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ ॥ २ ॥ काज़ी किताबैं खोलता, नसीहत बतावै औरको । अपना अमल कीन्हा नहीं, कामिल हुआ तो क्या हुआ ॥ ३ ॥ पोथीके पाना बांचता, घरघर कथा कहता फिरै । निज़ ब्रह्मको चीन्हा नहीं, ब्राह्मण हुआ तो क्या हुआ ॥ ४ ॥ गांजारुभांग अफीम है, दारू शराबा पोशता । प्याला न पीयाप्रेमका, अमली हुआ तो क्या हुआ ॥ ५ ॥ शतरंज चौपरगंजफा, बहु मर्द खेलैं हैं सभी। बाज़ी न खेली प्रेमकी, ज्वारी हुआ तो क्या हुआ ॥ ६ ॥ भूधर बनाई वीनती, श्रोता सुनो सब कान दे । गुरुका वचन माना नहीं, श्रोता हुआ तो क्या हुआ ॥ ७ ॥